विचार बिन्दु

**हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर**

# ज्ञान, समझ, युक्ति

ज्ञान, समझ और युक्ति जीवन के सभी पहलुओं से जुड़े तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। ज्ञान वस्तुतः आंकड़ों से आंकड़ों या आंकड़ों से सूचना या सूचना से सूचना के संयोग का ऐसा संग्रह है जिसका सन्देश स्पष्ट होता है। ज्ञान के कम से कम तीन प्रकार हैं: शोध आधारित-ज्ञान, अनुभवजन्य-ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान। कार्य-संपादन में इन तीनों का महत्वपूर्ण योगदान है। अच्छा नेतृत्व नवीन ज्ञान को जीवन भर सीखता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं: थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति, जिसकी बात हम आगे करेंगे, को मॉडलिंग के समकक्ष माना जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है। नवाचार और रचनात्मकता में ज्ञान एक महत्वपूर्ण कारक है।प्रभावी संचार के लिए ज्ञान भी आवश्यक है। जिन लोगों को किसी विषय की गहरी समझ होती है, वे आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं, और समस्याओं के हल करा सकते हैं। पर ज्ञान से आगे की यात्रा और भी महत्वपूर्ण है। किसी कार्य को सम्पादित करते समय ज्ञान का उपयोग करने से अनुभव प्राप्त होता है। जीवन के विविध क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते हैं, जिससे ज्ञान से आगे हमारी समझ या विजडम बढ़ती रहती है।विजडम को भारतीय दर्शन में बुद्धिमत्ता, मनीषा,मतिमानता, प्रज्ञा, प्रज्ञता, बुद्धिमानी,ज्ञान, ज्ञान-परिपूर्णता, ज्ञानज्ञता-कर्मज्ञता, समझ आदि कहा जाता है। प्राचीन दृष्टिकोण के साथ हीपिछले पाँच दशकों के दौरान साइंसऑफ़विजडम पर अनुसंधान में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। विजडम को परिभाषित करने के अनेक प्रयत्न हुये हैं किन्तु अभी तक सर्वमान्य परिभाषा का निर्धारण नहीं हो पाया है।विजडम व्यक्तित्व की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषता मात्र नहीं है बल्कि यह एक न्यूरोबायोलॉजिकल विशेषता है जो समाजोन्मुखी व्यवहार, भावनात्मक-नियमन और आध्यात्मिकता जैसे विशिष्ट घटकों से मिलकर बनती है। इस बात को आगे और भी स्पष्ट करेंगे।

हाल ही में लोगों में विजडम के घटकों को बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन मेटा-एनालिसिस द्वारा किया गया। इस अध्ययन में ऐसे क्लिनिकलट्रायल्स को समाविष्ट किया गया जो विजडम बढ़ाने के लिये अभी तक क्रियान्वित किये गये थे। इसमें 7096 व्यक्तियों से जुड़े 57अध्ययनों के आंकड़े समाहित किये गये थे। विजडम के सभी घटकों से संबंधित आंकड़े तो नहीं मिल पाये किन्तु समाजोन्मुखी-व्यवहार (प्रोसोशलबेहवियर) से संबंधित 29, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) से संबंधित 13 और आध्यात्मिकता (स्पिरिचुअलिटी) से संबंधित 15 अध्ययन शामिल किये गये थे। मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि आध्यात्मिकता,भावनात्मक-नियमन और समाजोन्मुखी व्यवहार को बढ़ाने के लिये किये गये हस्तक्षेप व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं (देखें, ई.ई. ली इत्यादि, जामा साइकेइट्री, 77(9):925-935, 2020)।

शोधकर्ताओं को मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित करने हेतुविजडम बढ़ाने के उपायों पर ऐसे अध्ययन नहीं मिले जो विजडम के सभी घटकों की समठाता को एकीकृत रूप से समाहित करते हुयेकिये गये हों। इस मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित समीक्षा के अनुसार विजडम को मापने के लिये कई दृष्टिकोण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये विजडम को दो रूपों में देखा जा सकता है-पहला उपयोगी अंतर सैद्धांतिक बुद्धिमत्ता (थ्योरेटिकलविजडम या जीवन के यथार्थ की समझ; प्रकृति और मानव के रिश्तों की समझ आदि) और दूसरी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (प्रैक्टिकलविजडम / फ्रोनेसिस, सही कारणों के लिये, सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता) सम्मिलित है। इन दोनों प्रकारों में सम्मिलित घटकों को मापने की विधियां और क्षमता वैज्ञानिक विकसित कर चुके हैं। परन्तु सैद्धांतिक ज्ञान (गहन समझ) की तुलना में व्यावहारिक ज्ञान (व्यावहारिक समझ) को प्रश्नावली के माध्यम से अधिक सुगमता से मापा जा सकता है। इस मेटा-एनालिसिस में व्यावहारिक समझ के सम्बन्ध में समाजोन्मुखी व्यवहार और भावनात्मक विनियमन को लिया गया और सैद्धांतिक समझ के संबंध में आध्यात्मिकता को शामिल किया गया। बुद्धिमत्ता के अन्य घटकों से जुड़े इंटरवेंशन वाले अध्ययनों की कमी के कारण निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चितता से निपटने की क्षमता, और सहिष्णुता जैसे घटक अध्ययन में शामिल नहीं किये जा सके। फिर भी जिन तीन घटकों को शामिल कर यह अध्ययन किया गया वह नया रास्ता दिखाने वाला है क्योंकि अध्ययन में सम्मिलित तीनों घटक अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। विजडम जैसे विषय यदि एम्पिरिकलरिसर्च की सीमाओं से परे ना भी हों तो भी काफी चुनौतीपूर्ण हैं।

प्रज्ञा के संबंध में यह बताना भी उपयोगी है कि आध्यामिकता इसका एक महत्वपूर्ण घटक है (देखें, डी.वी. जेस्ते इत्यादि, जर्नलऑफ़साइकियाट्रिकरिसर्च, 132:174-181, 2021)। आध्यामिकता और धार्मिकता में अंतर समझना जरूरी है। आध्यात्म हमें प्रकृति के समीप ले जाता है। आध्यामिकता व्यक्ति को व्यक्ति के समीप ले जाती है। आध्यामिकता प्राकृतिक तंत्रों के समीप भी ले जाती है। आध्यात्म वस्तुतः आत्मावलोकन और आत्म-समीक्षा के अवसर प्रदान करता है। आत्म-समीक्षा में यह भी शामिल है कि प्रकृति के साथ हमारे क्या संबंध हैं और हमें प्रकृति को बेहतर करने में हमारा क्या योगदान है। धार्मिकता एक अलग विषय है। धर्म की त्रुटिपूर्ण किन्तु बड़ी लोकप्रिय व्याख्या लोगों के बीच में मिलती है। ध्यान दीजिये, आध्यामिकता में किसी एक धर्म के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण नहीं है। आध्यात्मिकता जहां एक और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के जैसा मानने का विचार देती है वहीं दूसरी ओर धर्म की समकालीन स्थिति यह है कि सारा विश्व अलग-अलग जाति धर्म और संप्रदाय में बंट गया है। आत्मवत्सर्वभूतेषु का सिद्धांत आध्यात्म की मूल आत्मा है। दरअसल एक रिलीजियस व्यक्ति आध्यात्मिक भी हो सकता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्ति धर्म के लोकप्रिय स्वरुप के अनुसार धार्मिक भी हो ऐसा आवश्यक नहीं है। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि भारतीय दर्शन में धर्म शब्द का मूल अर्थ उस शब्द से नहीं है जिसे दुनिया रिलीजन कहती है।असल में धर्म का मूल अर्थ व्यक्ति के नियत कर्तव्यों और उनके पालन से है।

**ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है।**

प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक साहित्य में भी समझके वैज्ञानिक स्वरूप देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा गीता का अध्ययन कर उसमें विजडम, प्रज्ञा, ज्ञान आदि पर 10 घटक खोजे गये हैं। इनमें से जीवन का ज्ञान, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) या आत्म-नियंत्रण, इच्छाओं पर नियंत्रण, मध्यम-मार्ग (मॉडरेशन या टेम्पेरेंस) निर्णायकता, आत्मा और उसके विषय में ज्ञान, ईश्वर पर विश्वास, कर्म-योग, आत्म-संतोष, प्राणियों के प्रति दया, दान, योग इत्यादि ऐसे विषय हैं जो केवल दर्शन या धर्म के विषय नहीं हैं बल्कि क्लिनिकलट्रायल्स में भी उपयोगी पाये गये हैं। वर्तमान और अद्यतन शोध की स्थिति यह है कि विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। इनमें (1) सहिष्णुता एवं वैचारिक विविधता को स्वीकार करना, (2) अनिश्चितता के रहते हुये भी निर्णय लेने की क्षमता, (3) भावनात्मक विनियमन या इमोशनलरेगुलेशन, (4) समाजोन्मुखी व्यवहारया प्रोसोशलबिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता और करुणा आदि शामिल हैं, (5) आत्म-समीक्षा, (6) उचित सलाह देने में तत्परता या सोशलएडवाइजिंग तथा (7) आध्यात्मिकता शामिल हैं। जिस व्यक्ति में यह सभी सातों क्षमतायें (प्रज्ञा के घटक) पाये जाते हैं वह उन परिस्थितियों से बड़ी आसानी से बाहर निकल जाता है जिनमें प्रज्ञा में कमी वाले व्यक्ति उलझ जाते हैं।

वस्तुतः प्रज्ञा का मूल उद्देश्य स्वयं की और समाज की जिंदगी में बेहतरी लाना है। यहां एक प्रश्न उठता है कि यह विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा तो दुधारी तलवार हो सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जिसमें तिकड़मी बुद्धिमत्ता या एविल-विजडम हो। दरअसल ऐसा नहीं होता। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रज्ञा व्यक्ति को सदैव आत्म-नियंत्रित, आत्म-समीक्षक, और समाजोपयोगी ही बनाती है। प्रज्ञावान व्यक्ति अपने जीवन को सदैव बेहतर बनाता है और एक ऐसी आयु प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में सुखायु कहा जाता है। सुखायु के साथ-साथ प्रज्ञावान व्यक्ति एक ऐसी आयु भी प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में हितायु कहा जाता है। सुखायु और हितायुप्रज्ञावान व्यक्ति के लिये ही संभव है। शातिर दिमाग, तिकड़मी या चलता-पुर्जा व्यक्ति प्रज्ञावान नहीं होता। तिकड़म के लिये उसके पास जानकारी बहुत हो सकती है परंतु प्रज्ञाविहीन कोरी जानकारी सुखायु और हितायु नहीं प्रदान कर सकती। अब हम ज्ञान और समझ से आगे चलकर युक्ति की बात करते हैं जो ज्ञान और समझ सेभी आगे समस्याओं के हल का रास्ता है। यह लोगों को लीक से हटकर सोचने और समस्याओं के समाधान हेतु विविध विकल्प देते हुए श्रेष्ठ विकल्प चुनने में मदद करती है। युक्ति एक सार्वभौमिकप्रबंधकीय सिद्धांत है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक, जो युक्ति-व्यपाश्रय सिद्धांत के जनक माने जाते हैं, के अनुसार अनेक कारणों की समठाता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वर्तमान, भूत और भविष्य, तीनों कालों को जाना जा सकता है। युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25): बुद्धिःपश्यति या भावान्बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेयात्रिवर्गः साध्यतेयया।। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति के लक्षण और व्यापक सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुतः जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समठा अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है।एक उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिकमहत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है। दैनिक जीवन में समस्या-समाधानहेतु ज्ञान, समझ और युक्ति एक साथ और उत्तरोत्तर श्रेणीबद्ध रूप दोनों प्रकार से उपयोगी हैं। ज्ञान जानकारी और तथ्य प्रदान करता है जो हमें समस्या को समझने और संभावित समाधानों पर मंथन करने में मदद कर सकता है। समझ हमें पिछले अनुभव और स्थिति के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने में मदद करती है। युक्ति हमें आगा-पीछा देखकर एक जटिल समस्या को छोटे, आसानी से प्रबंधन-योग्यचरणों में तोड़ने में मदद करती है, जिसे समस्या को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए लागू किया जा सकता है। इन तीनबहुआयामी संसाधनों के बिना जीवन में हर क्षण आने वाली जटिल समस्याओं का प्रभावी समाधान निकालना लगभग असंभव हो जाता है।

**डॉ. दीप नारायण पाण्डेय**
**( भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर )**
**( यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं )**

# कुलपति नियुक्ति विवाद से समाज पर प्रभाव और समाधान

अशोक कुमार

8 अप्रैल, 2025 को, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने तमिलनाडु विधानसभा द्वारा विश्वविद्यालयों से संबन्धित, पारित किए गए 10 विधेयकों को मंजूरी दी, जो राज्यपाल द्वारा रोक दिए गए थे। इन विधेयकों के पारित होने के बाद, राज्य सरकार को तमिलनाडु के विश्वविद्यालयों में कुलपति की नियुक्ति का अधिकार मिल जाएगा।यह अधिकार पूर्व में माननीय राज्यपाल को था। कुलपति की नियुक्ति को लेकर राज्य सरकार और राज्यपाल के बीच केरल, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटकः, महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल में विश्वविद्यालयों में कुलपतियों की नियुक्ति को लेकर मतभेद सामने आए हैं। विवाद समाज पर कई नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इससे शिक्षा प्रणाली में अस्थिरता, गुणवत्ता पर प्रभाव, शैक्षिणक माहौल का खराब होना, शासन और प्रशासन में अवरोध, संस्थाओं की स्वायत्तता का क्षरण, राजनीतिक ध्रुवीकरण और विकास पर नकारात्मक असर पड सकता है। इसके अतिरिक्त, यह संवैधानिक मूल्यों और संघीय ढांचे पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, जिससे जनता का विश्वास कम हो सकता है।

इस संवेदनशील और महत्वपूर्ण मामले के समाधान के लिए राज्य सरकार और राज्यपाल दोनों को संविधान और विश्वविद्यालय अधिनियमों में उल्लिखित अपनी-अपनी शक्तियों और सीमाओं का स्पष्ट रूप से पालन करना चाहिए। यदि किसी विशेष बिंदु पर अस्पष्टता है, तो दोनों पक्षों को मिलकर निष्पक्ष कानूनी विशेषज्ञों से राय लेनी चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए। राज्यपाल और मुख्यमंत्री (या शिक्षा मंत्री) को नियमित रूप से इस मुद्दे पर और अन्य संबंधित मामलों पर चर्चा करनी चाहिए ताकि गलतफहमी और टकराव की स्थिति से बचा जा सके। कुलपति के नामों पर विचार करते समय, दोनों पक्षों को ऐसे नामों पर सहमति बनाने का प्रयास करना चाहिए जो योग्यता, अनुभव और निष्पक्षता के मानदंडों को पूरा करते हों।

चयन प्रक्रिया में सुधार के लिए कुलपति के चयन के लिए एक स्पष्ट, पारदर्शी और योग्यता-आधारित प्रक्रिया स्थापित की जानी चाहिए। इसमें शिक्षाविदों, विशेषज्ञों और विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रतिनिधियों को शामिल किया जा सकता है। एक निष्पक्ष और प्रतिष्ठित खोज समिति का गठन किया जाना चाहिए जो संभावित उम्मीदवारों के नामों की सिफारिश करे। इस समिति की सिफारिशों पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

कुलपति पद के लिए योग्यता मानदंड को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए और राजनीतिक विचारों से ऊपर रखा जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों को राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त रखा जाना चाहिए ताकि वे स्वतंत्र रूप से शैक्षिणक और प्रशासनिक कार्य कर सकें।

विश्वविद्यालय अधिनियमों में कुलाधिपति (अक्सर राज्यपाल) की भूमिका और शक्तियों को और अधिक स्पष्ट किया जाना चाहिए ताकि किसी भी तरह की अस्पष्टता या अतिरेक से बचा जा सके। यदि मामला न्यायालय में जाता है, तो सभी पक्षों को सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों का पूरी तरह से पालन करना चाहिए। इस तरह के महत्वपूर्ण संवैधानिक मुद्दों पर निर्णय लेने के लिए आवश्यकतानुसार संवैधानिक पीठ का गठन किया जा सकता है ताकि व्यापक कानूनी दृष्टिकोण मिल सके। राज्यपाल और मुख्यमंत्री जैसे संवैधानिक पदों पर बैठे व्यक्तियों के लिए एक आचार संहिता विकसित की जा सकती है जो उनके आपसी संबंधों और कार्यप्रणाली के लिए दिशानिर्देश प्रदान करे।

नागरिक समाज की भूमिका: नागरिक समाज, शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों को इस मुद्दे पर रचनात्मक चर्चा को बढ़ावा देना चाहिए और राजनीतिक नेतृत्व पर संवैधानिक मूल्यों और शिक्षा के हित में काम करने का दबाव डालना चाहिए। मीडिया को इस मुद्दे पर निष्पक्ष और तथ्यात्मक रिपोर्टिंग करनी चाहिए ताकि जनता को सही जानकारी मिल सके। कुलपति नियुक्ति विवाद एक संवेदनशील मुद्दा है जिसका समाज पर दूरगामी प्रभाव पड सकता है।

इसका समाधान संवैधानिक प्रावधानों का सम्मान, आपसी संवाद, पारदर्शी प्रक्रिया और विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता का सम्मान करने में निहित है। सभी हितधारकों को शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए और राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर एक ऐसा समाधान खोजने का प्रयास करना चाहिए जो उच्च शिक्षा के हित में हो और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाले।

**–अशोक कुमार,**
**पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर**

# गर्मी को देखते हुए वन विभाग अलर्ट मोड पर, पैंथर व हिरणों के पानी की व्यवस्था की

## झुंझुनूं जिले में बांसियाल, बागोर, मनसा माता तथा बीड़ चार कंर्जेवेशन रिजर्व है, जबकि शाकंभरी कंर्जेवेशन रिजर्व झुंझुनूं और सीकर में है

**झुंझुनूं**, (निसं)। गर्मी का मौसम शुरू हो गया है। गर्मी के मौसम में जिसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है वो है पीने के लिए पानी। ना केवल आमजन को, बल्कि जीव-जंतुओं को भी पानी की महत्ती आवश्यकता है। झुंझुनूं जिले में स्थित पांच कंर्जेवेशन रिजर्व जगहों में से दो जगहों पर पैंथर रहते हैं। तो एक जगह पर काले हिरण और चिंकारा रहते हैं। इनके लिए वन विभाग ने भी पानी की पर्याप्त व्यवस्था के लिए पूरा प्लान तैयार कर लिया है, ताकि कोई भी जीव पानी से ना मरें और ना ही भटके।

झुंझुनूं डीएफओ उमदाराम सियोल ने बताया कि झुंझुनूं जिले में बांसियाल, बागोर, मनसा माता तथा बीड़ चार कंर्जेवेशन रिजर्व है, जबकि शाकंभरी कंर्जेवेशन रिजर्व झुंझुनूं और सीकर में है। इनमें से बांसियाल, बागोर तथा मनसा माता कंर्जेवेशन रिजर्व में 13 पैंथर है। वहीं झुंझुनूं की बीड़ कंर्जेवेशन रिजर्व में 62 काले हिरण और 24 चिंकारा मौजूद हैं। इन सभी को गर्मी के मौसम में पर्याप्त पानी मिले, इसके लिए सभी वॉटर हॉल्स पूरी तरह से व्यवस्थित करवा दिए गए हैं। वहीं इनमें नियमित पानी आपूर्ति की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए विभागीय टीम लगाई है, जो इन वॉटर हॉल्स की मॉनिटरिंग करते हैं।

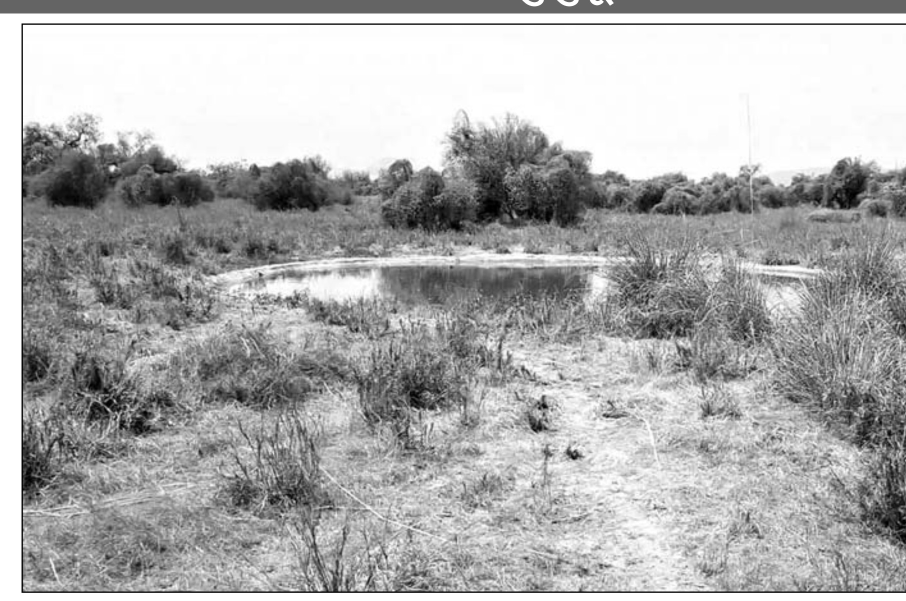

वन विभाग ने कंजर्वेशन रिजर्व में पैंथर, हिरणों और चिंकारा सहित अन्य वन्य जीवों के लिए वाटरहॉल बनाए हैं।

झुंझुनूं डीएफओ उमदाराम सियोल ने बताया पानी के लिए ना ही तो किसी वन्य जीव को भटकना पड़ेगा और ना ही प्यास से किसी की जान जाएगी। डीएफओ उमदाराम सियोल ने बताया कि बांसियाल में छह और मनसा माता कंर्जेवेशन रिजर्व में सात पैंथर छोड़े गए थे। संभावना है कि इनका कुनबा बढ़ा है। हालांकि नए आंकड़े तो वन्य जीव गणना के वक्त आएंगे, लेकिन हमारा फिलहाल टारगेट यही है कि गर्मी के कारण ना तो पैंथर को, ना ही हिरणों को और ना ही किसी अन्य वन्य जीव को भटकना पड़े। साथ ही इनके खाने को लेकर भी अभी तक कोई समस्या सामने नहीं आई है। खासकर पैंथर को पहाड़ी में ही अन्य जानवर मिल जाते है। उन्होंने बताया कि गर्मी बढ़ने के साथ ही वन विभाग ने गश्त और जल प्रबंधन के इंतजामों को और बढ़ा दिया है, ताकि वन्य जीवों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो। इन सभी की देखभाल के लिए विभाग की टीमें लगातार गश्त कर रही हैं और वाटरहॉल्स की स्थिति की निगरानी कर रही हैं। उन्होंने बताया कि बीड़ रिजर्व में धामन घास की पर्याप्त मात्रा है, जिसका हिरण और चिंकारा सेवन कर रहे हैं।

- **बांसियाल, बागोर तथा मनसा माता कंर्जेवेशन रिजर्व में 13 पैंथर हैं, झुंझुनूं की बीड़ कंजर्वेशन रिजर्व में 62 काले हिरण और 24 चिंकारा मौजूद हैं**

**नलकूप व टैंकरों के जरिए व्यवस्था :**-अप्रैल का महीना है और पारा 40 से उपर चल रहा है। इस प्रचंड गर्मी में हर कोई हलकान है। ऐसे में वन विभाग की पूर्व तैयारियां वन्य जीवों के लिए वरदान साबित हो रही है। वन विभाग द्वारा कंजर्वेशन रिजर्व में पैंथर, हिरणों और चिंकारा सहित अन्य वन्य जीवों के लिए जो जगह जगह वाटरहॉल बनाए हैं, जिनमें नलकूप और टैंकरों के जरिए नियमित पानी की आपूर्ति की जा रही है। साथ ही, छायादार आश्रय स्थल भी तैयार किए गए हैं ताकि जानवरों को तपती धूप से राहत मिल सके।

# चैत्र पूर्णिमा पर पुष्कर सरोवर में हजारों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई

## वैशाख माह के स्नान की शुरुआत, वैशाख पूर्णिमा के महास्नान के साथ समापन होगा

**पुष्कर**, (निसं)। तीर्थ नगरी पुष्कर स्थित पवित्र सरोवर में चैत्र मास की पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। इसके साथ ही वैशाख माह के स्नान की शुरुआत हुई, जो 12 मई वैशाख पूर्णिमा के महास्नान के साथ समापन होगा।

तीर्थ पुरोहित आचार्य पवन कुमार शर्मा ने बताया कि शनिवार को चैत्र मास की पूर्णिमा पर अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त से ही पुष्कर सरोवर के घाटों पर स्नान का सिलसिला शुरू हुआ जो देर शाम तक जारी रहा। साथ ही वैशाख माह के स्नान की शुरुआत हो गई, जो 12 मई को वैशाख पूर्णिमा पर महास्नान के साथ संपन्न होगा। श्रद्धालुओं ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजा-अर्चना की और पुरोहितों को दक्षिणा देकर पुण्य अर्जित किया। महिलाएं 52 घाटों पर आस्था की डुबकी लगाते हुए नजर आईं। स्नान के बाद धर्मप्रेमियों ने सरोवर की परिक्रमा की और ब्रह्मा मंदिर सहित अन्य प्रमुख देवालयों में दर्शन किए। स्नान के लिए उमड़ी भीड़ के चलते घाटों, मंदिरों और बाजारों में दिनभर चहल-पहल बनी रही। शाम को जयपुर घाट पर श्री पुष्करराज दिव्य महाआरती संघ एवं सनातन धर्म रक्षा संघ अजयमेरू की ओर से महाआरती हुई। संघ के संरक्षक अजय शर्मा ने बताया कि त्रिमंच पर तीर्थ पुरोहित चंद्रशेखर गौड़ एवं उनकी टीम के ज्योतिषाचार्य पंडित कैलाशनाथ दाधीच व पंडित रविशंकर शर्मा के आचार्यत्व में महाआरती हुई।

## राशिफल रविवार 13 अप्रैल, 2025

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, चित्रा नक्षत्र रात्रि 9:11 तक, हर्षण योग रात्रि 9:39 तक, बालव करण सायं 7:08 तक, चन्द्रमा प्रातः 9:39 से तुला राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज वैशाख संक्रांति, सूर्य मेष राशि में रात्रि 3:24 पर प्रवेश करेगा। शुक्र मार्गी प्रातः 6:38 पर होगा। आज एकलिंग जी पाटोत्सव, वैशाखी, विशु, मेष संक्रांति है।

**श्रेष्ठ चौघड़ियाः** चर 7:44 से 9:18 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:27 तक, शुभ 2:03 से 3:37 तक।

**राहूकालः** 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:46

### मेष

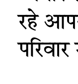

स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या व्यवस्थित होने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

### वृष

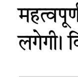

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी।

### मिथुन

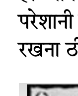

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

### कर्क

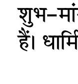

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

### सिंह

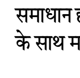

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

### कन्या

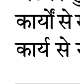

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है।

### तुला

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं।

### वृश्चिक

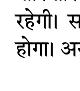

परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा।

### धनु

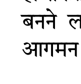

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

### मकर

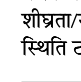

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

### कुंभ

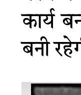

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी और उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

### मीन

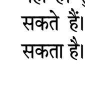

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।